सउदी अरब और रूस के बीच मतभेद

*डॉ. इंद्राणी तालुकदार**

पिछले वर्ष से चले आ रहे यूक्रेनी संकट, जिसने रूस और पश्चिम, विशेषकर अमरीका, के बीच मतभेद/टकराव को जन्म दिया, के कारण मास्को पर गंभीर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए गए। क्योंकि रूस (कच्चे तेल के) सबसे बड़े निर्यातकों में से एक है, (इसलिए) कूटनीतिक खींचतान के द्वारा कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट भी आई। इस (खींचतान) के कारण सिलसिलेवार गिरावट आई क्योंकि सउदी अरब ने घटती अंतर्राष्ट्रीय मांगों के बावजूद आपूर्ति में कटौती करने से इनकार कर दिया। कच्चे तेल की अत्यधिक आपूर्ति के कारण इस वर्ष के प्रारंभ में (कच्चे तेल का) मूल्य गिरकर 45 अमरीकी डॉलर प्रति बैरल हो गया, जिससे रूस के लिए गंभीर स्थिति पैदा हो गई।

हाल ही में (कच्चे तेल के) मूल्य में उत्तरोत्तर वृद्धि देखने में आई है। यह 45 डॉलर प्रति बैरल से बढ़कर 60 डॉलर प्रति बैरल हो गया, लेकिन रूस जिन प्रतिबंधों को झेल रहा है (उस के कारण) इससे रूस को किस हद तक फायदा होगा, इस पर प्रश्नचिन्ह है।

ईरान पर प्रतिबंधों से संकेत लेते हुए सउदी अरब ने अमरीका के इशारे पर घटती मांग के बावजूद तेल उत्पादन में कटौती नहीं करके रूस के लिए संकट पैदा कर दिया। अपने प्रतिबंधों के दौरान, ईरान तेल की ऊंची कीमतों के कारण अपने तेल काले बाजार में बेचने में सक्षम था। अत्यधिक आपूर्ति के कारण रूस ऐसी कार्यनीति अपनाने में असमर्थ है।

रूस के तेल राजस्व को प्रभावित करने के लिए सउदी अरब ने जान-बूझकर इस हथकंड़े को अपनाया है ताकि रूस पर घरेलू दबाव बनाया जा सके। इससे पहले असद शासन को रूस के समर्थन और ईरान के मामले में इसके असहयोगात्मक रूख के कारण अतीत में पश्चिम के साथ-साथ सउदी शासन को भी कड़वा सबक मिला।

सउदी शासन ने जो प्रशंसनीय बहाना बनाया वह यह था कि यदि यह आपूर्ति में कटौती करता है तो रूस सउदी के तेल बाजार पर कब्जा कर लेगा जिसके दीर्घकालिक परिणाम होंगे। इसका प्रमुख कारण वैश्विक तेल बाजार पर प्रभुत्व जमाने के लिए सउदी अरब तथा रूस के बीच प्रतियोगिता में निहित है।

सउदी अरब तथा रूस के बीच सोवियत संघ के समय से ही लगातार विवादास्पद संबंध बने रहे हैं जिसका कारण वर्ष 1979 में रूस द्वारा अफगानिस्तान पर आक्रमण और तेल बाजार पर इसका प्रभुत्व था। पूर्व सोवियत समय के दौरान पश्चिम एशिया क्षेत्र अमरीका और सोवियत संघ के खेमों में बंटा हुआ था। पूर्व सोवियत संघ (यूएसएसआर) के सहयोगी मिस्र, सीरिया और इराक थे जबकि सउदी अरब, तुर्की और ईरान (इज़राइल सहित) अमरीका के पक्ष में थे। सोवियत संघ द्वारा अधिक तेल उत्पादन से उपजी आर्थिक प्रभुत्व की चिंता वर्ष 1978 में अफगानिस्तान पर सोवियत आक्रमण के बाद सैन्य आक्रमणों के खतरे में बदल गई जिससे फारस की खाड़ी के राष्ट्र सोवियत सैन्य कार्रवाई के विरूद्ध सुरक्षा गारंटी के लिए अमरीकी खेमे में चले गए।

1970 और 80 के दशक तक, पूर्व सोवियत संघ विश्व का सबसे बड़ा तेल उत्पादक बन गया था और सउदी अरब की स्थिति के लिए खतरा पैदा कर रहा था। अपने प्रभाव को कायम रखने के लिए, वर्ष 1985 में राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन के सुझाव पर, रियाद ने तेल का उत्पादन बढ़ाकर और तेल की कीमतों को कम करके सोवियत (संघ) की तरक्की का प्रतिरोध किया, जिसके परिणामस्वरूप रूबल का अत्यधिक अवमूल्यन हुआ और सोवियत संघ दिवालिया हो गया। यह तनावपूर्ण संबंध 1990 के दशक में भी जारी रहा, जब रूस पर हथियारों की आपूर्ति के मामले में ईरान का समर्थन करने और उसके परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का भी समर्थन करने के आरोप लगे थे। दूसरी ओर, मास्को ने चेचेन विद्रोहियों का समर्थन करने और रूस तथा पूर्व सोवियत संघ के अन्य गणराज्यों में मुसलमानों के बीच 'वहाबीवाद' फैलाने का कार्य करने के लिए सउदी अरब की निन्दा की थी। तेल बाजार में प्रतियोगी हितों ने दोनों देशों के बीच की कड़वाहट को और बढ़ा दिया।

रूस वैश्विक ऊर्जा बाजार पर प्रभुत्व जमाने के लिए अपने कच्चे तेल का उत्पादन और निर्यात बढ़ाने का इच्छुक रहा है। रूस को विवश करने के लिए सउदी अरब ने प्रस्ताव किया कि मास्को को *ओपेक* में शामिल हो जाना चाहिए ताकि कच्चे तेल के उत्पादन को विनियमित किया जा सके। तथापि, रूस ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया, जिससे दोनों देशों के बीच न भरी जा सकने वाली खाई पैदा हो गई। रियाद की असफलता और कच्चे तेल के विशाल उत्पादन तथा निर्यात के कारण रूस के आर्थिक

उत्थान ने सउदी अरब के लिए बेचैनी भरी स्थिति पैदा कर दी। इतना ही नहीं, रूस में तेल और ऊर्जा के विशाल भंडारों की खोज ने (सउदी) अधिराज की इस आशंका को प्रबल कर दिया।

वास्तव में, वर्ष 2003-2004 के दौरान, रूस तथा सउदी अरब के बीच कच्चे तेल के उत्पादन में प्रतियोगिता रही जिसके कारण यह डर पैदा हो गया कि इस क्षेत्र में रूस की विशाल क्षमता वैश्विक तेल बाजारों में खाड़ी के देशों की हिस्सेदारी तथा मूल्यों को प्रभावित करने की *ओपेक* की क्षमता को चुनौती दे सकती है और तेल के व्यापार में सउदी अरब के वर्चस्व को समाप्त कर सकती है। रूस ने खाड़ी के देशों, विशेषकर सउदी अरब से कच्चे तेल के उपभोक्ताओं को अपनी ओर खींचने के लिए असमान कीमतें अपनाई हैं। विकासशील देशों, विशेषकर एशिया के देशों से मांग में प्रत्याशित बढ़ोत्तरी के साथ ही, दोनों देशों के बीच मूल्यनिर्धारण और कच्चे तेल की आपूर्ति में और अधिक प्रतियोगिता होगी।

राजनीतिक तथा आर्थिक दोनों ही परिदृश्यों में अंतर्राष्ट्रीय कार्यकर्ता/खिलाड़ी के रूप में रूस के बढ़ते महत्व को सउदी अरब सहित अनेक देशों द्वारा चुनौती के रूप में देखा गया है। पिछले वर्ष से सउदी अरब की तेल की कीमतें घटाने की युक्ति, जिन्हें उनकी सदियों पुरानी प्रतिद्वंद्विता की कड़ी के रूप में देखा जा सकता है, उसके पीछे के तर्क इस प्रकार हैं:

- रूस और सउदी अरब के बीच फैले संदेह ने दोनों देशों के बीच छिपे हुए मतभेद को हवा दे दी है। रूस ने उस क्षेत्र में तथा विश्व भर में आतंकवाद को धन मुहैया कराने का आरोप सउदियों और खाड़ी के अन्य देशों पर लगाया था। *सोची* ओलंपिक खेलों के दौरान सउदियों ने रूस पर किसी भी प्रकार के हमले के संबंध में चेचेनिया विद्रोहियों तथा अन्य अतिवादियों से सुरक्षा की गारंटी का प्रस्ताव दिया था जिसे रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने ठुकरा दिया था, जिसके कारण दोनों देशों के बीच कड़वाहट बढ़ गई। मास्को असद के शासन को इस्लामिक अतिवाद द्वारा तेजी से अस्थिर बनाए गए क्षेत्र के कवच के रूप में देखता है। यह इस्लामिक कट्टरता को अपनी सुरक्षा के लिए खतरे के रूप में देखता है। चेचेन्या और दागिस्तान अलगाववादी मुद्दे ऐसी बड़ी चुनौतियां हैं जिन्हें क्रेमलिन सरकार दबाने का प्रयास कर रही है। रूस (सउदी) राजतंत्र पर रूसी मुसलमान अतिवादियों सहित विपक्षी विद्रोहियों को समर्थन देने का आरोप लगाता है, जिन्होंने असद शासन व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोहियों का साथ दिया था। क्रेमलीन के अनुसार, विपक्ष को रियाद और अन्य खिलाड़ियों के समर्थन के कारण खतरनाक स्थिति पैदा हुई है और सीरिया संकट में गतिरोध आ गया है।

- सउदी इस क्षेत्र में रूस के बढ़ते प्रभाव से असहज होते जा रहे हैं। विशेषकर अरब क्रान्ति के बाद, मास्को उस क्षेत्र में शांति संस्थापक की भूमिका अदा करने का प्रयास कर रहा था। उदाहरण के लिए, वर्ष 2013 में मास्को ने अमरीका तथा ईरान के बीच मध्यस्थ बनने का प्रयास किया और संबंधों में किसी भी प्रकार की नर्मी सउदियों के भविष्य के लिए लाभकारी नहीं होगा।

वर्ष 2014 के बाद से यूक्रेन के संकट के और गहरा जाने के कारण रूस और पश्चिम, विशेषकर अमरीका के बीच मतभेद पैदा हो गया। इसके कारण सउदियों के लिए रूसी तेल बाजार को चुनौती देने हेतु अनुकूल परिस्थितियां पैदा हुई हैं। यह वर्ष 1985 के इसी प्रकार की कूटनीतिक चाल की पुनरावृत्ति है जिसके दौरान सउदी अरब ने अमरीका सहित अनेक देशों के समक्ष कच्चे तेल की आपूर्तियों पर अपनी पकड़ साबित करने और उसे कायम रखने का प्रयास किया था।[1]

इस संदर्भ में ईरान और अमरीका के बीच बदलता संबंध नए क्षेत्रीय परिवर्तन को परिभाषित कर सकता है। ईरान और सउदी अरब के बीच अंतर्निहित जातीय भिन्नता के साथ-साथ ईरान के कच्चे (तेल) निर्यातों पर लगे प्रतिबंधों की संभावित समाप्ति इस क्षेत्र में एक जटिल सत्ता/पावरप्ले और एक पेचीदा कूटनीतिक आव्यूह/मैट्रिक्स का सृजन कर सकती है जो भौगोलिक अवस्थाओं तथा भागीदारों को पुन:परिभाषित करेगी। इस अधिराज के लिए रूस के साथ संतुलन कायम रखना एक विवेकपूर्ण कदम हो सकता है न कि उस देश के साथ किसी विभाजनकारी मुद्दे (फाल्ट लाइन) का निर्माण करना।

***

*_डॉ. इंद्राणी तालुकदार विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता हैं।_

[1] तेल की कीमतों में गिरावट अमरीका के शेल तेल की कीमत पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।